>

Title: Regarding alleged negligence of regional languages in the examinations conducted by U.P.S.C.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): सभापति महोदय, यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन की प्रतियोगी परीक्षाओं में सभी प्रतियोगी आंदोलन कर रहे हैं। ...(व्यवधान) जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र भी आंदोलन कर रहे हैं। ...(व्यवधान) उनके आंदोलन का क्या कारण है? ...(व्यवधान) कारण है कि जो देशी भाषा बोलने वाले लोग हैं, देशी भाषा लिखने वाले लोग हैं, जो गांव के गरीब घर से आते हैं। ...(व्यवधान) देहात से आते हैं। ...(व्यवधान) जो तमिल, तेलुगु, मराठी, बंगला भाषा, उड़िया, मलयालम, गुजराती और आदि देशी भाषा बोलते हैं। ...(व्यवधान) केवल देशी भाषा ही नहीं, जो अरबी भाषा है, उर्दू भाषा है, पाली भाषा है, ये सभी जो जानने वाले लोग हैं, ...(व्यवधान) इनको यूपीएससी की परीक्षाओं में मौका नहीं दिया जा रहा है। ...(व्यवधान) पहले ज्यादा मात्रा में वे लोग चुन कर आते थे। ...(व्यवधान) अब घट कर के एकदम कम हो गए हैं।...(व्यवधान) इसीलिए कि सी-सैट की परीक्षा में साढ़े 22 नंबर की अंग्रेजी अनिवार्य कर दी गई है। ...(व्यवधान) इस कारण से सभी देहाती और देसी भाषा बोलने वाले लोग मार खा रहे हैं। ...(व्यवधान) इतना ही नहीं अभी जब आंदोलन हुआ तो उनको दो अतिरिक्त मौके दिए गए हैं। ...(व्यवधान) लेकिन सन् 2011 में जो प्रतियोगी थे, उनकी अवस्था 30 वर्ष पूरी हो गई। ...(व्यवधान) इसीलिए ऐज रिलैक्सेशन, ऐज कंसेशन सन् 2011 के लिए भी होना चाहिए। ...(व्यवधान) उनको भी दो बार अतिरिक्त मौका मिलना चाहिए। ...(व्यवधान) मतलब उनकी ऐज को कंसेशन कर के चार वर्षों का ऐज रिलैक्सेशन 34 वर्ष तक मिलना चाहिए। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय :

श्री शैलेन्द्र कुमार,

श्रीमती बोचा झांसी लक्ष्मी,

श्री पन्ना लाल पुनिय और

विनय कुमार पाण्डेय स्वयं को डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह के विषय के साथ संबद्ध करते हैं.